## शोध-सारांश

### 'मैथिली लोकगीतों का समाज-भाषावैज्ञानिक अध्ययन'

### (विशेष संदर्भ : ऋतु एवं पर्व गीत)

लोकगीत ग्राम-साहित्य का बहुत बड़ा अंग है। यह लोक-जीवन का इतिहास भी है जिसमें कहीं से भी कल्पना का समावेश नहीं होता हैं। ग्रामीण जीवन और उनकी संस्कृति को लोकगीतों में देखा-परखा जा सकता है। उन तमाम समस्याओं का उल्लेख भी लोकगीतों में मिलता है जो सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करती हैं। मैथिली लोकगीतों में लोक से संबंधित तमाम क्रियाकलापों का उल्लेख मिलता है। इन गीतों में समाज और उनकी वर्गीय, जातीय संरचनाओं का जिक्र मिलता है। एक जाति दूसरी जाति से किन-किन स्तरों से अलग है, उनकी मौलिक संस्कृति, पेशा, हर्ष, उल्लास आदि की झलक भी लोकगीतों में दिखाई पड़ती है। भिन्न-भिन्न जतियों के पेशे का भी सहज ढ़ंग से उल्लेख हुआ है। मैथिली लोकगीतों में अलग-अलग वर्गों के देवी-देवताओं से संबंधित गीत मिलते हैं। मैथिली भाषा के लोकगीतों में श्रम गीत, पर्व-त्योहार गीत एवं ऋतु संबंधित गीत आदि आते हैं। मिथिलांचल समाज में प्रचलित अंधविश्वास एवं रुढ़ियाँ एवं कई प्रकार की सामाजिक समस्याओं का उल्लेख भी लोकगीतों के माध्यम से हुआ है। जाति प्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, धार्मिक विडंबनाएँ इस समाज की जड़ में रही हैं जो कमोवेश आज भी कायम हैं। स्त्रियों पर हुए अत्याचार को जानने के लिए मैथिली लोकगीत एक सशक्त माध्यम है। श्रम संबंधी गीतों में श्रमिक वर्ग की समस्याओं का सजीव चित्रण मैथिली लोकगीतों में जगह-जगह पर मिलता है। मैथिली लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता है कि ये एक अंचल तक ही सीमित नहीं रहे हैं, बल्कि अंचल से बाहर निकलकर राष्ट्रव्यापी समस्याओं को भी अपने अंदर समेट लिया है। गांधी, जवाहर, चरखे का महत्त्व, स्वदेश के प्रति प्रेम, अंग्रेजों के अत्याचार इत्यादि का उल्लेख मैथिली लोकगीतों में मिलता है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय 'मैथिली भाषा और समाज' में मैथिली भाषी समाज की भौगोलिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक स्वरूप की चर्चा की गई है। मैथिली भाषी समाज में जाति, धर्म, वर्ग, लिंग आधारित सरंचनाओं का उल्लेख भी किया गया है। साथ ही विभिन्न वर्ग, धर्म और जातिगत समस्याओं का भी उल्लेख किया गया है। द्वितीय अध्याय 'मैथिली लोकगीत के परिचय एवं प्रकार' में मैथिली लोकगीत का परिचय, स्वरूप और उनके अलग-अलग

गीतों के प्रकार की चर्चा की गई है। वहीं इन गीतों के विविध सांस्कृतिक पक्षों का भी उल्लेख किया गया है। तृतीय अध्याय 'मैथिली लोकगीतों का समाज भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' में वर्गभेद के अंतर्गत विभिन्न वर्गों का उल्लेख किया गया है। लिंग भेद के अंतर्गत स्त्री-पुरुष के बीच असमानताओं की चर्चा की गई है जिनमें पुत्र-पुत्री के बीच भेद-भाव एवं शदियों से चली आ रही पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता को भी दिखाया गया है। वहीं लोकगीत के क्षेत्रीय वैविध्य में विविध क्षेत्रों में प्रचलित मैथिली लोकगीतों के भाषिक अंतर को दिखाया गया है, वहीं मैथिली लोकगीतों में सामाजिक समस्याओं का निरूपण के साथ समाज में व्याप्त कई प्रकार की समस्याओं का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय 'मैथिली लोकगीतों में कोड मिश्रण' में मैथिली लोकगीतों में अन्य भाषाओं के शब्दों के अलग-अलग प्रयोग को दिखाया गया है। अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, फ़ारसी, भोजपुरी इत्यादि भाषाओं के शब्द मैथिली लोकगीतों में प्रयुक्त हुए हैं जिन्हें कोड मिश्रण के द्वारा समझा जा सकता है, साथ-साथ लोकगीतों की मैथिली भाषा के साथ-साथ अन्य किन-किन भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है, इसका भी विश्लेषण किया गया है।

मैथिली भाषा का अस्तित्व काफी पुराना है। इसका प्रमाण संस्कृत साहित्य में तो मिलता ही है, साथ ही अपभ्रंश साहित्य में भी सिद्ध-नाथ द्वारा रचित दोहों के माध्यम से मिलता है लेकिन किसी भी प्रामाणिक रचनाओं के अभाव में यह तय करना काफी कठिन हो गया है कि मैथिली का प्रारंभ सिद्ध-नाथ साहित्य से ही हुआ था। मैथिली बिहार के कई जिलों में बोली जाती है। यह अलग-अलग भागों में भिन्न-भिन्न तरह से प्रयोग में है। पूर्णिया जनपद की मैथिली बंगाली से प्रभावित है, वहीं मुजफ्फरपुर की मैथिली भोजपुरी से प्रभावित है। नेपाल के कई जिलों में भी मैथिली बोली जाती है जो नेपाली और पहाड़ी बोली से प्रभावित है। मैथिली बिहार और नेपाल के अलावे असम और बंगाल तथा उड़ीसा में भी कमोबेश बोली जाती है। मैथिली भाषा की संमृद्ध परंपरा होते हुए भी आज इनके बोलने वालों की संख्या काफी कम हो रही है। वर्तमान में इस भाषा में साहित्य का लेखन-कार्य भी बहुत कम हो रहा है। इनकी अलग-अलग बोलियों ने मैथिली के मूल स्वरूप को काफी प्रभावित किया है। मानक, अमानक, गवारी, जोलहा जैसे नामकरण ने इसे काफी उपेक्षित किया है। मैथिली लोकगीत इन कारणों से भी अपना अस्तित्व खोता चला जा रहा है। लोक संस्कृति से लोगों के कट जाने के कारण भी इन गीतों का महत्त्व कम हो गया है। आज नई पीढ़ी के लिए लोकगीतों का कोई विशेष महत्त्व नहीं रह गया है। देश, काल और परिस्थिति की विविधता के कारण भाषा-भेद चाहे जो हो मनुष्य की मूल भावनाओं में अंतर नहीं होता है।

इस प्रकार मैथिली लोकगीत मानव-समाज की संस्कृति, परंपराओं एवं प्रतिबिंबों के जीते-जागते चित्र हैं। जिस समाज या क्षेत्र विशेष के लोकगीत होते हैं उस समाज या क्षेत्र का पूरा चित्र उसमें अंकित हो जाता है।